समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Friday, 04 September 2026

Avinash Panditrao Patange: गांव की मिट्टी से निकला जुनून, संघर्ष की राह पर बना 2,000 लोगों के रोजगार का आधार

Sanket Morankar

Published on 03 Sep 2026

मराठवाड़ा के हिंगोली जिले के एक छोटे से गांव से निकले एक युवा ने आर्थिक संघर्षों के बीच अपने सपनों को जिंदा रखा और मेहनत के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। कभी जेब में महज **500 रुपये लेकर काम की तलाश मे छंत्रपति संभाजीनगर** पहुंचे **Avinash Panditrao Patange** ने 38 रुपये प्रतिदिन की नौकरी से अपने सफर की शुरुआत की। आज उनका **Avinash Patange Labour Suppliers** व्यवसाय करीब **2,000 लोगों को रोजगार** उपलब्ध कराने तक पहुंच चुका है।

यह कहानी केवल एक व्यवसायी की सफलता की नहीं, बल्कि उस जिद, संघर्ष और मेहनत की कहानी है, जिसने एक सामान्य किसान परिवार के युवा को हजारों लोगों के लिए रोजगार का आधार बना दिया।

किसान परिवार से निकला जुनून

अविनाश पाटंगे का जन्म हिंगोली जिले के कळमनुरी तालुका स्थित **कोंढूर गांव** के एक किसान परिवार में हुआ। करीब 3 से 4 हजार की आबादी वाले इस गांव की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खेती पर निर्भर रही है।

संयुक्त परिवार में पले-बढ़े अविनाश को बचपन से ही अच्छे संस्कार, सादगी, कम संसाधनों में जीवन जीने और मेहनत करने की आदत मिली। यही संस्कार आगे चलकर उनके जीवन की सबसे बड़ी ताकत बने।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव की जिला परिषद स्कूल से हुई। इसके बाद उन्होंने कळमनुरी में आगे की शिक्षा प्राप्त की।

आर्थिक परिस्थितियों ने बनाया संघर्षशील

शिक्षा के दौरान ही उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आंखों में बड़े सपने थे, लेकिन परिवार की परिस्थितियां उन्हें

जल्द से जल्द काम तलाशने के लिए प्रेरित कर रही थीं।

उन्होंने तालुका और जिला स्तर पर रोजगार तलाशने के लिए कई प्रयास किए। लेकिन सीमित औद्योगिक अवसरों के कारण उन्हें लगातार निराशा का सामना करना पड़ा।

इसी संघर्ष ने उनके भीतर यह संकल्प पैदा किया कि **अब रुकना नहीं है और किसी भी परिस्थिति मे अपने सपनों को पूरा करना है।**

500 रुपये लेकर निकले संभाजीनगर की ओर

अपने भविष्य को बदलने के लिए उन्होंने छत्रपति संभाजीनगर जाने का फैसला किया। लेकिन यात्रा और रहने के लिए पैसे जुटाना उनके लिए बड़ी चुनौती थी।

ऐसे समय में उन्होंने अपनी किताबें बेचने का निर्णय लिया। इसके बाद करीब **500 रुपये लेकर रेल के माध्यम से संभाजीनगर** की ओर निकल पड़े।

शहर में उनका कोई परिचित नहीं था। जेब में मौजूद पैसे उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण थे। इसलिए उन्होंने खर्च बचाने के लिए काफी दूरी पैदल तय की और भोजन के लिए भी कई बार अपनी इच्छा को रोकना पड़ा।

उनके सामने सिर्फ एक लक्ष्य था—**काम हासिल करना और जिंदगी को नई दिशा देना।**

38 रुपये प्रतिदिन से शुरू हुआ सफर

कड़ी मेहनत के बाद उन्हें एक निजी कंपनी में नौकरी मिली। उस समय उनका वेतन केवल **38 रुपये प्रतिदिन** था। कंपनी में भोजन की व्यवस्था हो जाती थी, लेकिन ड्यूटी खत्म होने के बाद रहने की समस्या उनके सामने बनी हुई थी।

मुश्किल समय में उन्हें मदद मिली और रहने की व्यवस्था हो सकी। इसके बाद उन्होंने पूरी ईमानदारी और मेहनत के साथ अपना काम जारी रखा।

तीन महीने में मिली बड़ी जिम्मेदारी

उनकी मेहनत, व्यवहार और काम के प्रति समर्पण ने कंपनी प्रबंधन को प्रभावित किया। लगभग **तीन महीने के भीतर उन्हे ठेकेदार के सुपरवाइजर** के रूप में जिम्मेदारी मिली।

इसके बाद कंपनी प्रबंधन ने उनकी क्षमता और मेहनत को देखते हुए उन्हें स्वयं कॉन्ट्रैक्टर बनने का अवसर दिया।

यही अवसर उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

10 लोगों से शुरू होकर 2,000 लोगों तक पहुंचा रोजगार

वर्ष **2014 मे अंविनाश पाटंगे ने केवल 10 लोगों से अपना काम शुरू किया।**

छोटी शुरुआत धीरे-धीरे बड़े रोजगार नेटवर्क में बदलती गई। मेहनत, ईमानदारी, बेहतर प्रबंधन और लोगों के विश्वास के साथ उनका व्यवसाय लगातार आगे बढ़ता गया।

आज उनका काम करीब **2,000 लोगों तक रोजगार पहुंचाने** में सफल रहा है।

जिस युवा ने कभी स्वयं रोजगार के लिए संघर्ष किया था, वही आज जरूरतमंद लोगों के हाथों में काम देने की स्थिति में पहुंच चुका है। यही उनकी सफलता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

व्यवसाय के साथ समाजसेवा को भी दी प्राथमिकता

अविनाश पाटंगे ने व्यवसायिक सफलता को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं माना। उन्होंने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी महत्वपूर्ण समझा।

वर्षभर उनके द्वारा विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में योगदान दिया जाता रहा है। इनमें **रक्तदान शिविर, योग कार्यक्रम,**

वृक्षारोपण, जरूरतमंद विद्यार्थियों की सहायता, दिव्यांग व्यक्तियों की मदद तथा बाढ़ और भूकंप प्रभावित लोगों की सहायता जैसे कार्य शामिल रहे।

कोरोना काल में 500 लोगों के भोजन की व्यवस्था

कोरोना महामारी के दौरान जब देशभर में लॉकडाउन के कारण लाखों लोगों के सामने रोजगार और भोजन का संकट खड़ा हुआ था, उस कठिन समय में अविनाश पाटंगे ने करीब **500 लोगों के लिए दो समय के भोजन की व्यवस्था** की।

यह पहल उनके व्यवसायिक व्यक्तित्व के साथ-साथ उनकी सामाजिक संवेदनशीलता को भी दर्शाती है।

पत्नी के सहयोग को दिया विशेष श्रेय

अपनी सफलता की यात्रा में अविनाश पाटंगे ने अपनी पत्नी के योगदान को भी विशेष महत्व दिया।

जब वे व्यवसाय और सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहते थे, तब उनकी पत्नी ने परिवार की जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से संभाला। उनके त्याग और सहयोग ने अविनाश को अपने लक्ष्यों की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर दिया।

सम्मान को परिवार और कामगारों को किया समर्पित

अविनाश पाटंगे ने अपने पुरस्कार और सम्मान को केवल अपनी उपलब्धि नहीं माना। उन्होंने इसे **अपने माता-पिता, पत्नी, बच्चों और सभी कामगारों को समर्पित** किया।

उनका मानना है कि किसी व्यक्ति की सफलता के पीछे परिवार, सहयोगियों और साथ काम करने वाले लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

गांव की मिट्टी से निकला जुनून, संघर्ष की राह पर बना 2,000 लोगों के रोजगार का आधार—Avinash Panditrao Patange की कहानी मेहनत, जिद और सामाजिक जिम्मेदारी की प्रेरणादायक मिसाल है।

500 रुपये लेकर काम की तलाश में निकले और 38 रुपये प्रतिदिन की नौकरी से शुरुआत करने वाले अविनाश पाटंगे ने वर्ष 2014 में केवल 10 लोगों के साथ काम शुरू किया और उसे करीब **2,000 लोगों तक रोजगार पहुंचाने वाले व्यवसाय** में विकसित किया।

उनकी कहानी यह संदेश देती है कि **शुरुआत कितनी छोटी है, यह मायने नहीं रखता ; लक्ष्य कितना बड़ा है और उसके लिए हम कितनी ईमानदारी से मेहनत करते है, यही असली पहचान बनाता है।**

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.